ब्राह्मण, चोर, और दानव

एक गाँव में द्रोण नाम का ब्राह्मण रहता था। भिक्षा माँग कर उसकी जीविका चलती थी। सर्दी-गर्मी रोकने के लिये उसके पास पर्याप्त वस्त्र भी नहीं थे। एक बार किसी यजमान ने ब्राह्मण पर दया करके उसे बैलों की जोडी दे दी। ब्राह्मण ने उनका भरन-पोषण बडे यत्न से किया। आस-पास से घी-तेल-अनाज माँगकर भी उन बैलो को भरपेट खिलाता रहा। इससे दोनो बैल खूब मोटे-ताजे हो गये। उन्हें देखकर एक चोर के मन में लालच आ गया। उसने चोरी करके दोनो बैलो को भगा लेजाने का निश्चय कर लिया। इस निश्चय के साथ जब वह अपने गाँव से चला तो रास्ते मे उसे लंबे-लंबे दांतो, लाल आँखो, सूखे बालो और उभरी हुई नाक वाला एक भयंकर आदमी मिला ।

उसे देखकर चोर ने डरते-डरते पूछा- "तुम कौन हो ?"

उस भयंकर आकृति वाले आदमी ने कहा- "मैं ब्रह्मराक्षस हूँ, पास वाले ब्राह्मण के घर से बैलो की जोडी चुराने जा रहा हूँ।"

राक्षस ने कहा- "मित्र ! पिछले छः दिन से मैंने कुछ भी नहीं खाया। चलो, आज उस ब्राह्मण को मारकर ही भूख मिटाऊँगा। हम दोनो एक ही मार्ग के यात्री है। चलो, साथ-साथ चले।"

शाम को दोनो छिपकर ब्राह्मण के घर मे घुस गये। ब्राह्मण के शैयाशायी होने के बाद राक्षस जब उसे खाने के लिये आगे बढने लगा तो चोर ने कहा- "मित्र ! यह बात न्यायानुकूल नही है। पहले मैं बैलो की जोडी चुरा लूँ, तब तू अपना काम करना।"

राक्षस ने कहा- "कभी बैलों को चुराते हुए खटका हो गया और ब्राह्मण जाग पडा तो अनर्थ हो जायगा, मैं भूखा ही रह जाऊँगा। इसलिये पहले मुझे ब्राह्मण को खा लेने दे, बाद में तुम चोरी कर लेना।"

चोर ने उत्तर दिया- "ब्राह्मण की हत्या करते हुए यदि ब्राह्मण बच गया और जागकर उसने रखवाली शुरु कर दी तो मैं चोरी नहीं कर सकूंगा। इसलिये पहले मुझे अपना काम कर लेने दे।"

दोनो मे इस तरह की कहा-सुनी हो ही रही थी कि शोर सुनकर ब्राह्मण जाग उठा। उसे जागा हुआ देख चोर ने ब्राह्मण से कहा- "ब्राह्मण ! यह राक्षस तेरी जान लेने लगा था, मैंने इसके हाथ से तेरी रक्षा कर दी।"

राक्षस बोला- "ब्राह्मण ! यह चोर तेरे बैलो को चुराने आया था, मैंने तुझे बचा लिया।"

इस बातचीत में ब्राह्मण सावधान हो गया। लाठी उठाकर वह अपनी रक्षा के लिये तैयार हो गया। उसे तैयार देखकर दोनो भाग गये ।

सीख : शत्रु का शत्रु मित्र ।

ग़ुब्बारे, दर्जी, और बालक

एक गाँव में रज्जू नाम का ग़ुब्बारे रहता था। बेचा मागी कर उसकी जीविका चलती थी। मग्गी-गग्गी रकैन के लिय उसक पास पटर्पप्वस्ती नहीं था। एक बार किसी यल्मान ने ग़ुब्बारे पर दया करक उस बैले की जोड़ी दी। ग़ुब्बारे ने उनका हरन-पोषण बड़ यत्न स किया। सुस-पास स थी-उले-मनाए मागकर ही उन बैले के बेरपए िपलाता रहा। उसस दैनें बैले िप्र मटे-ताए हो गेय। उन्हें देखकर एक दर्जी क सन स लालच स ग गया। उसन चोरी करक दैनें बैले के बेगा लएन का निस्चय कर लिया। उस निस्चय क साथ एव वह मपन गाँव स चला त ेस्स्त उस लबं-लबं दाँत, लाल सुिप, साफ बाल और उलटी हुई नाक वाला एक हयंकर सुदसी मिला।

उस देखकर दर्जी न हेरत-हेरत पूछा- "तुम कौन हो?"

उस हयंकर सुकृति वाल सुदसी न कहा- "मं ब्रह्मराक्षस हूँ, पास वाल ग़ुब्बारे क घर स बैले की जोड़ी चुरान ए रहा हूँ।"

राक्षस न कहा- "मित्र! पिछल छः दिन स मन कुछ ही नहीं पाया। चल, सुए उस ग़ुब्बारे क मारकर ही हूख मिटाउँगा। हम दैनें एक ही मार्ग क यात्री हैं चल, साथ-साथ चल।"

सास क दैनें छिपकर ग़ुब्बारे क घर स घुस गय। ग़ुब्बारे क सेयों साथी हैने के बाद राक्षस एव उस िपान के लिय सुग बेढन लगा त दर्जी न कहा- "मित्र! यह बात न्यायानुकूल नहीं है। पहल मैं बैले की जोड़ी चुरा लूँ, तब तू मपना काम करना।"

राक्षस न कहा- "कही बैले के चुरात हुए िपटका हो गया और ग़ुब्बारे एग पड़ा त सनर्थ हो एयगा, मैं ह्रुखा ही रह एउँगा। उसलिय पहल सुए ग़ुब्बारे क िपा लन द, बाद स तुम चोरी कर लन।"

दर्जी न उत्तर दिया- "ग़ुब्बारे की हत्या करत हुए यदि ग़ुब्बारे बच गया और एगकर उसन रोिपवाली सचु कर दी त स चोरी नहीं कर सकुंगा। उसलिय पहल सुए मपना काम कर लन द।"

दैनें स उस तरह की कहा-सुनी हो ही रही थी कि सरें सुनकर ग़ुब्बारे एग उठा। उस एगा हुआ देख दर्जी न ग़ुब्बारे स कहा- "ग़ुब्बारे! यह राक्षस तरी एन लन लगा था, मैंने उसक हाथ स तरी रक्षा कर दी।"

राक्षस बोला- "ग़ुब्बारे! यह दर्जी तर बैले के चुरान सुया था, मैंने तुझ बचा लिया।"

उस बातचीत स ग़ुब्बारे सावधान हो गया। लाठी उठाकर वह मपनी रक्षा क लिय तैयार हो गया। उस तैयार देखकर दैनें हेाग गय।

सीख : सतर्क सतर्क मित्र।

अनुवाद - उर्मिला सिंह